Volume-5, No. I, Feb.-2018, pp.Hin.-14-17

स्वच्छन्दतावादी समीक्षक और उनकी सौन्दर्यवादी दृष्टि:

डॉ0 रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण'

डा. अरविन्द्र सिंह अरोरा,
अस्सिटेंट प्रोफसर, हिन्दी विभाग
माता साहिब कौर ग्रर्ल्स कालिज तलवारी भाई
फिरोजपुर पंजाब भारत।

डॉ0 खण्डेलवाल के संदर्भ में प्रथमतः स्वच्छन्दतावाद और आधुनिकता के पारस्परिक सम्बन्ध को समझना तर्कसम्मत दिखता है। स्वच्छन्दतावाद और आधुनिकता को कालगत सीमा में घेरा नहीं जा सकता। इन्हें सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक मान लेने में ही सुविधा है। स्वच्छन्दतावाद और आधुनिकता सहगांमी हैं। जहाँ–जहाँ स्वच्छन्दतावाद है, वहाँ–वहाँ आधुनिकता है। तथ्यतः आधुनिक काव्य–दृष्टि रोमैंटिक होगी ही तथा रोमैंटिक काव्य–दृष्टि आधुनिक होगी ही इसमें सन्देह के लिए अवकाश नहीं। आधुनिकता ओर स्वच्छन्दतावाद दोनों विगत के खंडहर पर समसामयिकता कं द्वारा अनुशांसित मानचित्र के अनुसार आधुनिकता का भव्य भवन खड़ा करना चाहते हैं। दोनों में रूढ़िगत बन्धन को तोड़ कर चलने का आवेश व्याप्त रहता है। विश्व–पटल पर घटित होने वाली विश्वस्त घटनाओं की प्रदीप्ति आधुनिक तथा स्वच्छन्दतावादी दोनों प्रकार की ही काव्य–कृतियों में दृष्टिगत होती है। स्वयुगीन पारिस्थितिक अनुप्रेरणाओं से दोनों की ही अभिज्ञता सम्पुष्ट बनल हुई परिलक्षित होती है। लोक–प्रचलित शब्दों को अपनी काव्य–प्रतिभा से अनुप्राणित कर कथ्य को काव्य–भाषा में रूपांतरित कर देने में स्वच्छन्दतावादी और आधुनिक काव्य–शिल्पी सम्भावेन निपुण दीख पड़ते हैं। लोक–चेतना, लोक–रुचि, लोक–भाषा, लोक–रंजन, लोक–मंगल एवं लोक–आकांक्षा के तन्तुओं से दोनों की ही काव्य–काया निर्मित हुई है।

डॉ0 रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' के काव्यों में भी कवि की स्वयुगीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक एवं धार्मिक परिस्थितियों की अनुप्रेरणाओं की कुक्षि उत्पन्न अभिज्ञता आधुनिकता एवं स्वच्छन्दतावाद की सम्मिश्रित चेतना से संवलित है।

हिन्दी में अब छायावाद को व्यापक अर्थ में स्वच्छन्दतावाद' (रोमैंटिसिज़्म) से संबोधित किया जाने लगा है। 'छायावाद' शब्द एक नामगत रूढ़ि के अतिरिक्त कोई सार्थकता नहीं रखता। यह काव्य का व्यंग्यात्मक विशेषण रहा है जो नाटक, कहानी आदि साहित्यरूपों को घेर नहीं पाता–" स्वच्छन्दतावाद अपनी अर्थव्याप्ति में छायावाद को समाविष्ट कर लेता है। यह एक ओर भारतीय साहित्य से भी जुड़ जाता है और दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय काव्यधारा 'रोमैंटिसिज़्म' से भी" डॉ0 नामवर सिंह, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ0 हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ0 रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण', प्रभृति बहुसंख्यक हिन्दी समालोचकों ने भी स्वच्छन्दतावाद और छायावाद को प्रायः एकार्थक बताया है।

डॉ0 रामेश्वरलाल खण्डेलवाल का कहना है कि "हिन्दी स्वच्छन्दतावाद या रोमांसवाद के मुलतत्त्व प्रायः वे थे जो अंग्रेजी कविता के रोमांसवाद में प्राप्त होते हैं, अर्थात् रूढ़ियों से मुक्ति, व्यक्तिगत जीवनानुभूति, स्वच्छन्द व रमणीय कल्पना, प्रकृति के प्रति गम्भीर प्रेम तथा उसमें चेतन–सत्ता का आरोप, अतीत और भविष्य के प्रति लालसा–ललक, बौद्धिकता के स्थान पर कोमल भावना का प्राधान्य, मुक्त छद–विधान आदि। इस वक्तव्य में स्वच्छन्दतावाद की प्रायः सारी प्रवृत्तियाँ आ गयी हैं। डॉ0 खण्डेलवाल का यह विवरण ग्राह्य है।

रोमैंटिसिज़्म अथवा स्वच्छन्दतावाद को मात्र एक ऐतिहासिक घटना अथवा काव्यान्दोलन के रूप में देखना अपूर्णावलोकन कहा जा सकता है। उक्त स्वच्छन्दता को मनुष्यमात्र की एक सतत, मौलिक, सहज, स्थायी व अविच्छेद्य प्रवृत्ति के रूप में देखना अधिक युक्तिसंगत है। हर आत्मचेता महान् रचनाकार जन्मना स्वच्छन्द प्रवृत्ति का होता है। स्वानुकूलित संवर्द्धक वातावरण प्राप्त कर समय–समय पर उसकी स्वच्छन्दता विरलावस्था से सघनावस्था में विकसित होकर 'वाद' का रूप ले लेती है। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर की अवधारणा है कि साहित्य एवं नदी की गति सर्वदा सीधी नहीं होती। कुछेक समय तक सीधी चाल चलने के बाद इनकी गति में मोड़ आ जाता है। यह मोड़ आधुनिकता का होता है अथवा रोमैंटिसिज़्म का होता है। कारण कि रोमैंटिसिज़्म एवं आधुकिता एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। अतः पूर्वागत

काव्य–रचना–सरणि से इतर व्यक्तिस्वातन्त्र्य–जनित अभिनव, स्वस्थ व विकसित काव्योन्मेष को स्वच्छन्दतावाद कहा जाय।

स्वच्छन्दतावादी कलाकार नव–सर्जनोन्मुखी होता है। वह सर्जक अत्यधिक–किन्तु विध्वंसक अत्यल्प होता है। व्यक्ति–स्वातन्त्र्य एवं उर्वर कल्पना में ही सर्जना के दो मूल उपादान उसके पास होते हैं। उसकी काव्य–दृष्टि सर्वदा एवं सर्वत्र मन्मय बनी हुई दृष्टिगत होती है। वह मन्मयता को तन्मयता की तुलना में अति विश्वासनीय, श्रेय एवं प्रेय मान बैठता है। रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' ने भी साहित्यिक दलबन्दी या समूह की अवमानना की बात उठाकर स्वच्छन्दतावादी काव्य–शिल्पी के लिए व्यक्तिस्वातन्त्र्य के वरेण्य बताया है। कल्पना स्वच्छन्दतावादी कवि की संजीवनी होती है। वह उसी के सहारे अतीतचारी, व्योमचारी, परलोकचारी, प्रकृतिविहारी, रहस्यान्वेषी आदि बनता दीख पड़ता है। किन्तु वर्तमान के दायित्व से वह सर्वदा अपने को बोझिल पाता है। साथ ही भविष्य–चिन्तन से उच्छवसित हुआ भी दृष्टिगोचर होता है।

'तरुण' के काव्य में स्वच्छन्दतावादी सम्पूर्ण स्वस्थ काव्य–प्रवृत्तियों का युगसापेक्ष विकास दृष्टिगत होता है। स्वच्छन्दतावादी–छायावादी चतुष्टयी (प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी) की कविताओं से कवि 'तरुण' की कविताओं की तुलना करने पर हमें सर्वांगसमता का अभाव खटकता है। कल्पना की अतिशय उर्वरता, गह्रिस्थित रहस्यमयता की निविड़ता, सुदूर अतीतचारिता आदि के प्रसंग में कवि 'तरुण' की अत्याधुनिक स्वच्छन्दतावादी काव्य–दृष्टि, पूर्ववर्ती स्वच्छन्दतावादी काव्य–शिल्पियों की काव्य–दृष्टि से स्पष्ट पार्थक्य बनाती दृष्टिगोचर होती है। 'तरुण' का स्वच्छन्द रचनाकार अपने समसामयिकों से भी शतप्रतिशत एकरूपता बनाता दृष्टिगत नहीं होता। 'अंचल' के शब्दों में– ''स्वच्छन्दता का ऐसा मादक और ताजगल से पूर्ण वातावरण का ऐसा सृजन आप (तरुण) करते हैं कि हिन्दी के प्रत्येक कवि से दूर आप दिखाई देते हैं''। यद्यपि 'तरुण' पहचाने हुए आलोचक हैं, कोई बहुतचर्चित कवि नहीं, परन्तु कवि–रूप में उनको अनदेखा–अनसुना कर देना न्यायोचित होगा।

स्वच्छन्दतावादी कलाकार विधि–रचित वर्तमान सृष्टि को पूर्ण नहीं पाता। 'तरुण' के स्वच्छन्द रचनाकार को भी सृष्टि का वर्तमान रूप लगभग कुरूप, खण्डित, थोथा, प्रदूषित, भयंकर एव अशुभंकर दीख पड़ता है। शोषण–जर्जरित, विज्ञानाभिशाप से कलंकित–मम–तव में विखंडित अद्यतन मानव–समाज सम्प्रति कवि 'तरुण' को कुष्ट, क्षय एवं कैंसर रोग से ग्रसित नजर आता है। 'तरुण' का संवेदनशील काव्यशिल्पी उन विद्रूपताओं पर जमकर प्रहार करता है तथा क्षयशील सड़े–गले अंग–प्रत्यंग को काट–छांट कर अपनी सलोनी व पूर्णताग्रही कल्पना से उसमें नूतन रंग भरकर उसे स्वस्थतर, पूर्णतर एवं चित्तकर्षक बना देता है। खण्डित, अपूर्ण एवं अस्वस्थ वर्तमान के प्रति आक्रोश की ज्वाला से परितप्त कविवर 'तरुण'–कृत कतिपय कविताएँ उल्लेख की अपेक्षा रखती हैं, यथा–'राशन कार्ड के साथ वापस', सांभरझील', 'आदमी', 'यस सर', कुर्सीः 'मानव ज्वर' 'नवमानव', 'अस्वीकार', 'मैं झगड़ आया' आदि। वर्तमान की विद्रूपताओं एवं कमजोरियों पर प्रहार के उपरान्त 'तरुण' का स्वच्छन्दतावादी रचनाकार कल्पना–प्रसूज अभिप्रेत संसार के सृष्टि में भी अभिनिविष्ट दृष्टिगत होता है। 'विश्व–फुलवारी', 'नया जीवन नया समाज', 'गा मेरे कवि', 'मेरे–गीत', 'मौन मत होना', 'देखें क्या बनाता हूँ' आदि शीर्षकांकित कविताएँ उक्त प्रसंग में उल्लेखनीय हैं।

'तरुण' की कविताओं पर 'प्रसाद', पन्त, निराला, महादेवी, दिनकर, नागार्जुन, बच्चन, भगवतीचरण वर्मा प्रभृति श्रेष्ठ स्वच्छन्दतावादी काव्य–शिल्पियों के भावों की प्रतिच्छाया, यत्र–तत्र परिलक्षित होती है, इसमें संदेह नहीं। किन्तु 'तरुण' का विकसित स्वच्छन्दतावादी रचनाकार पूर्ववर्ती काव्य–कोया से नव्य काव्योत्पादन हेतु जितना उधार लेता है' उससे कई गुणा अधिक काव्य–जगत् को लौटा भी देता और उन्हें समर्थ कवि होने का हक दे जाता है।

'तरुण ' के श्रेष्ठ स्वच्छन्दतावादी कलाकार को बे–सिर–पैर की आधारच्युत नूतनता पसन्द नहीं आती। अकस्मात् व्योमपात नव्यता न तो संभव है, न ही ग्राह्य एवं विश्वसनीय। पुरातनता के खण्डहर पर नूतनता का युगोनुरूप साज–सँवार, तरुण–काव्य की खासियत कही जा सकती है। प्रकृति–चित्रण, मन्मयता, समष्टिवादिता, मानववाद, अध्यात्मिकता, समसामयिक जागतिक विद्रूपताओं एवं सामरजिक–आर्थिक कुव्यवस्थाओं का अंकन, क्रान्ति का आह्वान, जाति–धर्म, भाषा, देश, रंगभेद–विरोध, शोषणमुक्त समतामूलक समाज–सृष्टि प्रभृति स्वच्छन्दतावाद की जितनी पूर्वमान्य काव्य– प्रवृत्तियाँ हैं, उन सब का 'तरुण' की कविताओं में मनोमुग्धकारी विकास देखने को मिलता है। प्रकृति–चित्रण के क्षेत्र में भी **उनका श्रेष्ठ स्वच्छन्दतावादी काव्य–शिल्पी, स्वयुगीन आकांक्षाओं को अपनी कविताओं में आँक कर, जल–ध्वनि–वायु–प्रदूषण के प्रतिरोधन में वानस्पतिक योगदान की युग–चर्चा में मनसा, वाचा एवं कर्मणा सम्मिलित दृष्टिगत होता है।**

हर रोमैंटिक कवि की तरह कविवर ‘तरुण’ की लेखनी भी अभिधा से अग्रसरित होकर व्यंजना में अपना विलक्षण कौतुक प्रदर्शित करती दृष्टिगोचर होती है। लोक–प्रचलित शब्द भी कवि की रोमैंटिक जादुई तूलिका का स्पर्श पाकर उसकी नूतन अभिज्ञता के सुपुष्ट संवाहक बनते परिलक्षित होते हैं। वहाँ टी0 एस0 इलियट की बर्गलर एवं सुकवि के बीच की तुलना वाली बात सही प्रमाणित होती दृष्टिगत होती है। प्रथागत शब्द भी कवि ‘तरुण’ के स्वच्छन्दतावादी संस्कांर से सुसंस्कृत होकर चिर काव्य–यात्रा–जनित शैथिल्य से विमुक्त होते दीख पड़ते हैं। अभिधा से लक्षणा तथा अन्त में व्यंजना तक काव्य की शोभा–यात्रा को सफल बनाती शब्द–शक्तियाँ ‘तरुण’ को श्रेष्ठतम काव्य–शिल्पी की कोटि में प्रतिष्ठित करती प्रतीत होती हैं। सौन्दर्य–चेतना को निरन्तर विकसित, परिवर्द्धित और परिमार्जित किया है। सम्भवतः उसी दिन से मनुष्य की चेतना ने सौन्दर्य के विषय में चिन्तन प्रारम्भ कर दिया होगा। भारतीय और यूरोपीय मनीषा निरन्तर सौन्दर्य की व्यख्या करने का प्रयत्न करती रही है। इस व्याख्या–सर्ग में भावुक कवि–हृदयों के साथ ही साथ दार्शनिक विश्लेषकों का भी निरन्तर योगदान मिलता रहा है।

कुछ चिन्तक सौन्दर्य की आत्मपरक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं ओर उसे आत्मा का सहज व्यापार एवं दिव्य आनन्द का स्रोत घोषित करते हैं तो दूसरे सौन्दर्य की वस्तुपरक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं और सौन्दर्य का आधार इसी संसार के वैभव में निहित मानते हैं। लगता है, दोनों ही वर्गो के चिन्तक अतिवाद की सीमाओं को स्पर्श करते हैं और दार्शनिक तर्कजाल के पचड़े की अनन्त उलझनों में खो जाते हैं। वास्तव में सौन्दर्य की सही व्याख्या उन समन्वयवादियों ने की है, जो मानव के कल्याण–सम्पादन के साथ सौन्दर्य को जोड़कर चलते हैं। जड़ जगत् की सत्ता से इनकार करना असंभव बात है। पर अनन्त सुन्दरता का प्रतिष्ठान होने पर भी जिसमें हृदय के रस और आत्मा के आनन्द का अभाव है वह सौन्दर्य निरर्थक है, व्यर्थ है। ‘हृदय के रस और आत्मा के प्रकाश से अछूता सौन्दर्य पूर्ण चाकचिक्य युक्त होकर भी निर्जीव व जड़ है और वस्तु के आधार से स्वतन्त्र और मनोजगत् में ही सूक्ष्म, अव्यक्त तथा अचिन्त्य रूप से शयन करने वाली वायवी सौन्दर्य– भावना भी निरर्थक व निष्फल। वास्तव में सौन्दर्य की सत्ता दोनों के समुचित सामुजस्य में है।

कविवर रामेश्वरलाल खण्डेलवाल ‘तरुण’ के पास सौन्दर्य की वैसी ही पारखी आँख है, जो अपने चारों ओर सुन्दरता की खोज कर उसको अनुपम भाव–चित्रों और शब्द–चित्रों में सँजो देने में समर्थ है। इस पारखी आँख के साथ ही साथ कवि के पास अतलस्पर्शी भावना है और अभिव्यक्ति–कौशल की विलक्षण क्षमता, जो उनके सोन्दर्य–चित्रों को जीवन्त कर देती है। यह दूसरी बात है कि विषयपटी बहुत अधिक विशाल नहीं है, पर जितनी है उस पर उन्होंने सौन्दर्य का तनल रेखांकन बड़ी सफलता से किया है, रमणीय चित्र बड़े लाघव के साथ खड़े किए हैं। मानवीय और प्राकृतिक दोनों ही प्रकार के सौन्दर्य के शब्द–चित्र उनके काव्य में बिखरे पड़े हैं।

कवि ‘तरुण’ के मानवीय–शरीर के सौन्दर्य–चित्रण की अपनी विशेषता है कि उसमें वासनात्मक चित्रों का सम्पूर्ण अभाव है, इसके विपरीत मानवतन उनकी कविताओं मे सरलता–तरलता के साथ गतिवान हो उठा है। रमणी की स्वर्णदीयष्टि हो या बालिका की चंचल देह–लता, सभी में सुन्दरता की सहज, शान्तिपूर्ण शीतलता के दर्शन होते हैं, शब्दों के रमणीय विधान नज़र आते हैं।

‘तरुण’ जी के मानवीय सौन्दर्य–चित्रण में सूक्ष्मता के साथ समग्रता है। एक और बड़ी विशेषता यह है कि वह वासना की उपाम आँधी से अछूता है, उसमें मानवीय संवेदना के सहारे मनुष्य के हृदय की सरलता, तरलता ओर अमलता के दर्शन होते हैं।

सौन्दर्य के कवि ‘तरुण’ बाह्य रूप–सौन्दर्य के साथ ही भाव–जगत् के मानसिक सौन्दर्य के प्रभावपूर्ण चित्र उकेरने में अति कुशल हैं। प्रिया को पीहर से विदा कर घर ले जाने वाले ‘तरुण’ के मन का उल्लास, कहीं ननद–भाभी का हास–परिहास, स्नेह–पूरित बहन का दुलार, उसमें बहता हुआ आत्मीयता और प्रेम का अजस्र स्रोत, कहीं वर्षा के बादलों को देख ग्रामीणों के हृदय में अंकुरित होते सपनों का साकार चित्र–सभी पाठक को आनन्द मग्न कर देते हैं। सौन्दर्योपासक कवि ने विराट में भी सौन्दर्य के दर्शन किए हैं। प्रकृति का विविधमुखी सौन्दर्य हो, चाहे अन्तर्जीवन का सूक्ष्म भाव–सौन्दर्य अथवा मानव–शरीर का आकर्षण–इन सबको कवि ने भाव–चित्रों और शब्द–चित्रों में रूपायित कर दिया है।

कवि का सौन्दर्य, सत्य और शिव से परिपूत है। श्रृंगार कहीं भी काव्य में स्खलित नहीं हुआ, कवि पन्त की तरह कवि ‘तरुण’ मे भी सौन्दर्य के साथ पावनता निहित है। तरुण के काव्य–संसार का शिल्पगत सौन्दर्य रसग्राही पाठक को अभिभूत कर देता है। छायावादयुगीन सूक्ष्म कल्पना; भाषा में लाक्षणिकता, सौन्दर्य की सुकुमारता–कोमलकान्त पदावली–सभी विशेषताएँ उसमें विद्यमान हैं।

प्रेम और सौन्दर्य तत्त्व के विशेषज्ञ डॉ0 ‘तरुण’ ने अपनी काव्य–कृतियों में प्रेमाभिव्यक्ति अभिवन रूप में की है। “प्रेम की अनुभूति से ही आत्मा का उन्मीलन

होता है और आनन्द–कला छिटकती है। उससे अन्तःकरण में स्थित आत्मा का अनुभाव होता है''। डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक का यह कथन सत्य है कि 'तरुण' जी के प्रेम और सौन्दर्य का स्वरूप मानवकल्याण हेतु पवित्र भावना और उससे निःसृत पवित्र समर्पण भावों को उद्भूत करता है। 'तरुण' के काव्य में प्रेम का फलक अति विशाल है, विलक्षण है। प्रकृति–प्रेम, देश–प्रेम और उससे ऊपर सूक्ष्म के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति कवि के काव्य में लबालब भरी हुई है।

डॉ0 रामेश्वरलाल 'तरुण' एक ऐसे समीक्षक के रूप में सामने आते हैं, जिसमें वैविध्य और विस्तार के साथ सूक्ष्मता और गहराई भी है, सहृदयता के साथ निर्मल दृष्टि भी है और विशद एवं गम्भीर अध्ययन से अर्जित ज्ञान के साथ मौलिक चिन्तन की सामर्थ्य भी है। समीक्षा के स्वरूप के लिए 'तरुण' ने अपनी पूर्व मनीषा के उत्तमांश को समेटते हुए नवीन जीवन–स्पृहाओं एवं कलारुचियों का सम्मसन भी अनिवार्य माना है। इसलिए उन्होंने शस्त्रीय प्रतिमानों के वृत्त में सीमित न रहकर बदलती हुई युग–चेतना को आत्मसात करके अपनी समीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक उदार और प्रमाणित रूप प्रदान किया।

आज हिन्दी समीक्षा–जगत् में श्री तरुण सौन्दर्यशास्त्र के विशिष्ट ज्ञाता के रूप में सुप्रतिष्ठित हैं। काव्य के क्षेत्र में यदि वे सौन्दर्य के अनुभोक्ता हैं तो समीक्षा के क्षेत्र में सौन्दर्य तत्त्व का विश्लेषण करने वाले मर्मज्ञ विद्वान हैं। उक्त तत्त्व के सैद्धान्तिक विवेचन के साथ–साथ प्राचीन व आधुनिक काव्य में सौन्दर्य तत्त्व की समीक्षा–सम्बन्धी उनकी अनेक रचनायें बड़ी पांडित्यपूर्ण एवं सारगर्भित हैं।

हिन्दी आलोचना साहित्य के इतिहास में एक सहृदय समालोचक के रूप में तरुण सदैव याद किए जाएँगे, क्योंकि वे एक प्रसिद्ध समीक्षक हैं। उनके संवेदनशील कवि–हृदय ने जहाँ कृति–विशेष के मूल मर्म को समझने तथा आलोच्य साहित्यकार की सूक्ष्मतम अन्तर्भावनाओं का आत्मसात करके उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने में सहायता की, वहाँ उनकी बौद्धिक जागरूकता, पारखी अर्न्तदृष्टि, तर्कणा–शक्ति, नीर–क्षीर विवकेतापूर्ण विश्लेषण–क्षमता ने गृहीत प्रभाव तथा उपलब्ध तथ्यों का निष्पक्ष निरीक्षण किया। निर्भीक, दृढ़, निस्संग, अनुभवी, साहित्य के प्रति निष्ठावान तथा अन्वेषक बुद्धि के स्वामी तरुण के समीक्षक रूप को उनके रसग्राही हृदय तथा सर्जक व्यक्तित्त्व ने ही पूर्णता प्रदान की है। उनका समीक्षकीय प्रतिभा का निदर्शन प्रसाद– काव्य के मूल्यांकन में मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि–

1. डा0 रामेश्वरलाल खण्डेलवाल : आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य, पृ0 325
2. श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी : युग और साहित्य, पृ0 220
3. डॉ0 तपेश्वरनाथ–कवि 'तरुण' : सर्जन के नये क्षितिज, पृ0 80
4. ववि 'तरुण' सर्जन के नये क्षितिज, पृ0 88
5. आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य, पृ0 161
6. डॉ0 संतोष कुमार तिवारी : कवि तरुण का काव्यः संवेदना और शिल्प, पृ0 80
7. डॉ0 बच्चन सिंह : आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0 155
8. कवि 'तरुण' सर्जन के नये क्षितिज, पृ0 115